वन उत्पादकता संस्थान, रांची
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून)
पर्यावरण,वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत

"लघु वनोत्पाद के महत्व"

विषय पर संगोष्ठी

दिनांक 18.11.2021

वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के निर्देश पर वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक के तत्परतापूर्ण पहल पर आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत लातेहार के चंदवा लाह बीज फार्म में तथा भुजियांपानी (बागडोगरा) जिला दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल में "लघु वनोत्पाद के महत्व" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

चंदवा लाह बीज फार्म में आयोजित संगोष्ठी के मुख्य अतिथि चंदवा के अंचल अधिकारी श्री सुरेंद्र प्रसाद सिंह उपस्थित रहें। अंचल अधिकारी, अंचल निरीक्षक एवं संस्थान के वैज्ञानिक श्री अंशुमन दास द्वारा द्वीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए श्री विष्णुदेव पंडित, तकनीकी अधिकारी ने बिरसा मुण्डा को नमन किया एवं कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की। अंचल निरीक्षक ने संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्य की सराहना की। अंचल अधिकारी ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बताया कि वनोत्पाद से रोजगार की असीम सम्भावनांए है। वन से रोजगार प्राप्त करें जिसके लिए वन का संरक्षक आवश्यक है। श्री किरण प्रसाद, अड़हतिया ने भी लघु वनोत्पाद के विषय मे बताया। श्री अंशुमन दास, वैज्ञानिक, वन उत्पादकता संस्थान, रांची ने लगभग 20 औषधीय वनोत्पाद की चर्चा करते हुए विभिन्न वनोत्पाद के संरक्षण, संवर्धन के तरीकों से अवगत कराया। उन्होने औषधीय पौधों की खेती के तरीकें, उत्पादन, भण्डारण एवं बाजार के विषय में विस्तार से बताया। एलोवेरा, सर्पगंधा, अश्वगंधा, गिलोय, ब्राम्ही आदि की खेती के तरीको को बताते हुए उसके प्रसंस्करण के विषय में भी बताया।

वरिष्ठ तकनीकी सहायक श्री सूरज कुमार ने बाजार के विषय में जानकारी देते हुए लघु वनोत्पाद के संरक्षण के बारे में लोगो को प्रेरित किया। उन्होने बताया कि अश्वगंधा, चिरैता, नीम, करंज, तुलसी, एलोवेरा आदि की अहमियत है जो रोग के किटाणुओं को नष्ट करने में सहायक सिद्ध होती है।

आखिरी सत्र में श्री बी.डी.पंडित ने बिरसा मुण्डा के आदर्शों को वन संरक्षण से जोड़ते हुए किसानों को वन संरक्षण, जल, जंगल, जमीन की सुरक्षा में जनजातियों की भुमिका को विस्तार से बताया। बांस उत्पादन में चीन से स्पर्धा, संस्थान द्वारा चलाए जा रहे बांस पौधरोपण और लोगों के रुझान से भी अवगत कराया। लघु वनोत्पाद का 2 लाख करोड़ के बाजार की चर्चा करते हुए महिलाओं की इस रोजगार में 40-60% भागीदारी की भी चर्चा की तथा कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों एवं सहकर्मियों का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

पर्यावरण अनुसंधान स्टेशन, सुकना, पश्चिम बंगाल द्वारा भी **"लघु वनोत्पाद के महत्व"** विषय पर संगोष्ठी का आयोजन ग्राम भुजियांपानी (बागडोगरा) जिला दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल में किया गया। इस कार्यक्रम में गांव के 40 लोगो ने बढ़-चढ़कर कर भाग लिया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. अनन्या मंडल, उप–निदेशक, कृषि विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार रहे। उन्होने अपने उद्बोधन में लघु वनोत्पाद के महत्व पर बल दिया। कार्यक्रम में वन के संरक्षण के लिए इसके उपयोग और टिकाऊ फसल और इसकी आवश्यकता पर भी विचार–विमर्श किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुकना केंद्र के प्रभारी अधिकारी श्री प्रमोद चंद लकड़ा, उप-वन संरक्षक ने किया। ग्रामीणों में इस संगोष्ठी में लघु वनोत्पाद फसल के बारे में सीखने की दिशा के प्रति खासा उत्साह देखा गया तथा इसके लिए वनों का संरक्षण के प्रति लोग सजग दिखें। अंत में श्री पी.सी.लकड़ा ने उपस्थित प्रतिभागियों एवं सहकर्मियों का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

चंदवा लाह बीज फार्म में आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

चंदवा लाह बीज फार्म में आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

चंदवा लाह बीज फार्म में आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

ग्राम भुजियांपानी (बागडोगरा) में आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

ग्राम भुजियांपानी (बागडोगरा) में आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

लघु वन उत्पाद के महत्व पर संगोष्ठी का आयोजन

संवाद सूत्र, चंदवा (लातेहार): आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत वन उत्पादकता संस्थान रांची द्वारा चंदवा लाह बीज फार्म में लघु वन उत्पाद के महत्व पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन अंचलाधिकारी सुरेंद्र सिंह, सीआई रमेश रविदास और तकनीकी पदाधिकारी विष्णु देव पंडित ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया। मौके पर तकनीकी पदाधिकारी सह प्रभारी बीडी पंडित ने लघु वनोत्पाद के बारे में जानकारी देते कहा कि यह ग्रामीणों के साथ देश की आर्थिक समृद्धि में सहायक हो सकता है। बताया कि करंज, गोंद, इमली, जंगली शहद, लाख, चिरांज, साल के पत्ते, बांस, तेंदू, साल के बीज, पयाल, स्टीविया, सतावर, गुड़मार, गिलोय जैसे वनोंत्पाद जनजातीय लोगों की आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत गैर काष्ठ वनोत्पाद है। ये जंगली क्षेत्र के नजदीक रहनेवाले लोगों को जीविका और नकद दोनों उपलब्ध कराते हैं खाद्य, फल दवा और अन्य लघु वनोत्पाद उपभोग वस्तुओं का एक बड़ा भाग है। जो उनकी समृद्धि में सहायक होता है। जनजातीय लोग अपनी आय 20 से 40 प्रतिशत भाग लघु वनोत्पाद से प्राप्त करते हैं लेकिन लगातार उपयोग से इनके अस्तित्व पर संकट आता जा रहा है। जरूरत है कि इन लघु वनोंत्पादों को पूरी तरह नष्ट होनें से बचाएं।

सीनियर टेक्निकल तकनीकी सहायक सूरज कुमार ने बाजार के विषय में जानकारी देते हुए लघु वनोत्पाद के संरक्षण के बारे में लोगों को प्रेरित किया। बताया कि अश्वगंधा, चिरौता, नीम, करंज, तुलसी, एलोवेरा आदि की अपनी अहमियत है। जो रोग के कीटाणुओं को नष्ट करने में सहायक होती है। मौके पर विनेश्वर उरांव, चरकू, दीपक, महेंद्र, नागेंद्र समेत विभिन्न गांवों से आए किसान मौजूद थे।

संगोष्ठी को संबोधित करते तकनीकी पदाधिकारी बीडी पंडित • जागरण

दैनिक जागरण 19.11.2021